भूमिका

हिंदी भाषा-भाषियों को ध्यान में रखते हुए, हिंदी माध्यम से अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन और अध्यापन के लिए तैयार की गई पाठ्य सामग्रियों की श्रृंखला है 'भारतीय भाषा ज्योती'। इस श्रृंखला की पुस्तकों की रचना भारत सरकार के भारतीय भाषा संस्थान (मैसूर) तथा उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा विभाग के सहयोग से संचालित कार्यशालाओं में हुई थी। *भारतीय भाषा ज्योति : मराठी* पुस्तक इस श्रृंखला की एक कड़ी है।

इन पाठ्य सामग्रियों में प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् छात्रों से निम्नलिखित भाषिक निपुणताओं की अपेक्षा की जाती हैं:

1. मराठी भाषी द्वारा भाषा प्रयोग की विभिन्न स्थितियों में किए जानेवाले दिन-प्रतिदिन के वार्तालापों का सुनकर समझना,
2. रेडियो व टी.वी. पर प्रसारित होनेवाले समाचारों, विज्ञापनों, उद्घोषणाओं और अन्य कार्यक्रमों का सार ग्रहण करना,
3. कक्षा में सहपाठियों के साथ अपनी दिनचर्या के विषय में सरल वाक्यों में बातचीत करना एवं मराठी भषियों से इन विषयों पर औपचारिक तथा अनौपचारिक संदर्भों में चर्चा करना,
4. मराठी भाषा में पुस्तकों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, सूचनापट्टों, इश्तहारों, व्यक्तिगत तथा अन्य प्रकार के पत्रों आदि से संबंधित छोटे छोटे अनुच्छेदों को पढ़ना और साथ ही शब्दकोश और संदर्भ ग्रंथों का उपयोग कर पाना,
5. विभिन्न विषयों पर छोटे छोटे गद्यांश लिखना, व्यक्तिगत एवं अन्य प्रकार के पत्र लिखना तथा अपनी रुचि के परिचित तथा सरल विषयों पर निर्देशित व स्वतंत्र लेख लिखना,
6. शब्दकोश की सहायता लेते हुए मराठी से हिंदी में और हिंदी से मराठी में किसी भी गद्य सामग्री का अनुवाद करना, तथा
7. मराठी भाषा के साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों अथवा परिवेश की जानकारी प्राप्त करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्य पुस्तक की रचना की गई है। भाषा के चारों कौशलों-श्रवण, भाषण, वाचन तथा लेखन पर यहाँ समान रूप से बल दिया गया है। श्रवण और भाषण कौशलों के विकास के लिए प्रत्येक पाठ में वार्तालाप दिए गए हैं और उस के बाद मौखिक अभ्यास के लिए पर्याप्त सामग्री है। इसी प्रकार वाचन और लेखन कौशलों के विकास के लिए प्रत्येक पाठ में एक वाचन अनुच्छेद है और सात ही अभ्यास भी। यह पुस्तक कक्षा में अद्यापक की सहायता से भाषा सीखने के लिए तैयार की गई है।

मराठी लिखने के लिए देवनागरी लिपि का ही प्रयोग होता है। इस प्रकार मराठी तथा हिंदी में लिपि समान है। कुछ अक्षरों के उच्चारण में हिंदी तथा मराठी में अंतर पाया जाता है। इस के संबंध में विस्तृत विवरण 'भूमिका' के बाद दिया गया है।

इस पुस्तक के चार भाग हैं - भूमिका, मराठी उच्चारण, पाठमाला तथा शब्दसूची। पुस्तक के पाठों में भाषा संरचनाओं पर आधारित वार्तालाप तथा अभ्यास, वाचन-लेखन, अनुवाद अभ्यास तथा सरल व्याकरणिक व सांस्कृतिक बिंदुओं के विषय में पर्याप्त जानकारी दी गई है। 'शब्दसूची' में पाठों में आए मराठी शब्दों को वर्णक्रम में प्रस्तुत कर उनके अर्थ हिंदी में दिए गए हैं।

पाठों का ढाँचा इस प्रकार है -

1. वार्तालाप
2. पाठ में आए नए शब्दों के अर्थ
3. अभ्यास
4. वाचन अनुच्छेद (पढ़िए और समझिए)
5. अनुच्छेद में प्रयुक्त नए शब्दों के अर्थ
6. अनुच्छेद संबंधी अभ्यास
7. अनुवाद तथा लेखन अभ्यास
8. व्याकरणिक तथा सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

पाठ में दिए गए वार्तालाप तथा वाचन अनुच्छेद में एक सी ही संरचनाओं का प्रयोग किया गया है। यही संरचनाएँ पाठ के शिक्षण-बिंदु हैं। अनुवाद तथा लेखन अभ्यास भी इन्हीं शिक्षण-बिंदुओं पर आधारित हैं।

पुस्तक के वार्तालापों का चयन भाषा-प्रयोग की उन सामान्य स्थितियों को लेकर किया गया है जिनका सामना हमें अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में करना पड़ता है। उदाहरण के लिए किसी परिचित के घर जाना, किसी उत्सव में सम्मिलित होना, बढ़ती-महंगाई पर चर्चा करना, किराये का मकान खोजना या मकान बनवाने के कष्टों की चर्चा करना, इलाज के लिए डॉक्टर के पास जाना, किसी दर्शनीय स्थल पर घूमने जाना आदि वार्तालाप के विभिन्न विषयों को अलग ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है जिससे विद्यार्थी यह जान सकेंगे कि मराठी भाषा में निवेदन कैसे करते हैं, आदेश कैसे देते हैं, मना कैसे करते हैं, नम्रता कैसे अभिव्यक्त की जाती है, हास-परिहास कैसे किया जाता है, सांत्वना कैसे दी जाती है आदि। पाठ के वार्तालाप और वाचन अनुच्छेद की विषय वस्तु में भी यथासंभव साम्य रखने का प्रयास किया गया है। वाचन अनुच्छेदों के लिए लेखन की विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया गया है। जैसे कोई अनुच्छेद वृत्तांत रूप में है तो कोई विवरणात्मक, कोई संवेदनात्मक, कोई आत्मकथा के रूप में। कहीं निबंध शैली को अपनाया गया है तो कहीं संस्मरण का सहारा लिया गया है। कहीं कहानी जैसा सरस माध्यम लिया गया है कहीं पत्र जैसा उपयोगी माध्यम।

पाठमाला में 24 पाठ हैं। इन पाठों में से 20 शिक्षण-पाठ हैं और 4 पुनर्भ्यास पाठ हैं। शिक्षण पाठ 4 इकाइयों में बाँटे गए हैं। प्रत्येक इकाई में 5-5 शिक्षण पाठ हैं और एक-एक पुनर्भ्यास पाठ है। इस प्रकार इस पुस्तक में पाठ 6, 12, 18 और 24 पुनर्भ्यास पाठ हैं। शिक्षणार्थ पाठों को व्याकरणिक संरचनाओं और शब्दों की संख्या व प्रकार के आधार पर स्तरीकृत किया गया है। स्तरीकरण के मूलतत्व इस प्रकार हैं।

1. परिचित से अपरिचित की ओर
2. सरल से कठिन की ओर
3. प्रत्येक से सामान्य की ओर
4. सामान्य से तकनीकी की ओर

भाषाई संरचनाओं पर आधारित वार्तालापों का स्तरीकरण करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि पाठ्य-सामग्री की स्वाभाविकता बनी रहे। अतः बाद के पाठों में सिखाए जानेवाले शिक्षण बिंदुओं से संबंध कुछ संरचनाएँ आरंभ के पाठों में आ गई हैं। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उस पाठ विशेष की विषय-वस्तु के संदर्भ में उनका उल्लेख आवश्यक था। ऐसी संरचनाओं को उस पाठ की शब्द सूची के हिस्से के रूप में दर्शाया गया है।

शिक्षण पाठों में आई हुई संरचनाएँ

प्रत्येक पाठ में आए हुए वाक्य साँचो को निम्न प्रकार से सूची-बद्ध किया जा सकता है।

पाठ नं.

1. i) अस्तिवाचक (योजक क्रियावाले) वाक्य
   माझं नाव शांता प्रकाश जोशी आहे. — मेरा नाम शांता प्रकाश जोशी है।
   ii) विधिवाचक वाक्य
   आई, तू बस. — माँ, तू (तुम) बैठ (बैठो)।

2. i) योजक क्रियावाले वाक्यों के निषेधवाचक रूप
   तो आंबेमोहोर तांदूळ नाही. — वह आंबेमोहेर चावल नहीं है।
   ii) विधिरूप के निषेधवाचक वाक्य
   तू उठ नकोस. — तू उठ मत।

3. योजक क्रियावाले वाक्यों में 'कशासाठी, कशाला' जैसे प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग
   तुला सही कशासाठी हवी आहे? — तुम्हें हस्ताक्षर किसलिए चाहिए?

4. इच्छार्थक क्रियावाले वाक्य

सर्वांची मतं घेऊया.	सब की राय लें।

5. इच्छा/बाध्यता/अनिवार्यता सूचक वाक्य

आज आपल्याला रामुकाकांच्या बागेत जायला हवं.	आज हमें रामुकाका के बगीचे में जाना चाहिए।
खूप पानं आणि फुलं गोळा करायला पाहिजेत.	बहुत सारे पत्ते और फूल इकट्ठे करना चाहिए।

6. 1 से 5 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं का पुनरावलोकन

7. सामान्य वर्तमानकालिक क्रियावाले वाक्य

मी बाळूचा अभ्यास घेते.	मैं बाळू को पढ़ाती हूँ।
त्याला गृहपाठ जमत नाही.	वह (स्वयं) गृहकार्य नहीं करता है।

8. अपूर्ण वर्तमानकालिक क्रियावाले वाक्य

मी सिनेमा बघते आहे.	मैं सिनेमा देख रही हूँ।

9. 'अस' के प्रयोग, अभ्यासिक वर्तमानकाल

ती साताऱ्याला असते.	वह सातारा में (रहती) है।
मी जात असतो.	मैं जाता रहता हूँ।

10. क्रिया के साथ '-ऊन', '-ऊन-ऊन', तथा '-ता-ता' प्रत्यय लगाकर बननेवाले पूर्वकालिक कृदंतों (असमापिका क्रियारूप) का प्रयोग

तो बसून म्हणाला.	वह बैठकर बोला.
ती वाचून वाचून थकून जाते.	वह पढ़ते पढ़ते थक जाती है।
याची सगळी कामं रेडिओ ऐकता ऐकता होतात.	उसके सब काम रेडिओ सुनते सुनते होते हैं।

11. i) क्रिया के साथ '-आय + ला/साठी/पुरता/चा' और '-ताना' प्रत्यय लगाकर बननेवाले कृदंतों का प्रयोग

ती मला बसायला आग्रह करते.	वह मुझसे बैठने का आग्रह करती है।
ती मला बसायसाठी आग्रह करते.	वह मुझसे बैठने हेतु आग्रह करती है।
ती मला बसायपुरता आग्रह करते.	वह मुझसे बैठने भर का आग्रह करती है।
तो काम करताना गाणं म्हणतो.	वह काम करते हुए गाना गाता है।

ii) प्रेरणार्थक क्रिया वाले वाक्य

		(मी) आत्याकडून कविता दुरुस्त करवून घेते.	(मैं) बुआ से कविता ठीक करवा लेती हूँ।
12.	7 से 11 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं का पुनरावलोकन		
13.	i)	सामान्य भविष्यत्कालिक क्रियावाले वाक्य	
		(मी) तासाभरात परत येईन.	(मैं) एक घंटे में वापस आऊँगा।
	ii)	भविष्यत् काल के क्रियाओं के वैकल्पिक रूप	
		(मी) तासाभरात परत येणार आहे.	(मैं) एक घंटे में वापस आनेवाला हूँ।
	iii)	'अस' क्रिया के रूप के साथ '-णार' लगाकर बननेवाले संभाव्य भविष्यत् काल के रूप	
		मी गावाला जाणार असेन.	मैं गाँव जानेवाला होऊँगा।
14.	i)	सामान्य भूतकालिक (अकर्मक) क्रियावाले वाक्य	
		काल (मी) मंडईत गेले.	कल (मैं) बाजार गई।
	ii)	पूर्ण वर्तमानकालिक क्रियावाले वाक्य	
		(तो) थोडा मलूल झाला आहे.	(वह) थोडा कुम्हला गया है।
15.	सामान्य भूतकालिक (सकर्मक) क्रियावाले वाक्य		
		त्यांनी मुलांना मदत केली.	उन्होंने बच्चों की मदद की।
16.	i)	पूर्ण भूतकालिक क्रियावाले वाक्य	
		परीक्षा संपली होती.	परीक्षा खतम हुई थी।
	ii)	पूर्ण भविष्यत्कालिक क्रियावाले वाक्य	
		मी परत येईपर्यंत तू निघून गेला असशील.	मैं वापस आने तक तुम निकल गए होंगे।
17.	i)	अपूर्ण भूतकालिक क्रियावाले वाक्य	
		वारली वेठबिगारीने काम करत होते.	वारली बेगारी पर काम करते थे।
	ii)	अपूर्ण भविष्यत् कालिक क्रियावाले वाक्य	

यापुढेही मी हेच काम करत असेन.	इसके बाद भी मैं यही काम करती रहूँगी।

18. 13 से 17 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं का पुनरावलोकन

19. i) शर्तवाले (हेतुमद्) वाक्य

जर तू महाराष्ट्रात गेलास तर तुला खूप काही बघायला मिळेल.	यदि तुम महाराष्ट्र गए तो तुम्हें काफी कुछ देखने को मिलेगा।

ii) 'हेतुहेतुमद् भूतकालिक क्रियावाले वाक्य

अजून काही दिवस आसामात घालविता आले असते तर आणखी छान वाटलं असतं.	यदि कुछ और दिन असम में बिताता तो और भी अच्छा लगता होता।

iii) शक्यता बोधक (शक्-'सक' क्रिया वाले) वाक्य

मी जाऊ शकतो.	मैं जा सकता हूँ।

iv) चुक क्रियावाले वाक्य

मी मुंबई आणि पुण्याला जाऊन चुकलो आहे.	अरे, मैं मुंबई और पुणे जा चुका हूँ।

20. वर्तमान, भूत तथा भविष्यत् काल के अभ्यासिक क्रियावाले वाक्य

i) वर्तमान - हल्ली तुम्ही काय करत असता?
(आजकल आप क्या कर रहे हो?)

ii) भूत - आम्ही जंगलातल्या वस्तीमध्ये जायचो.
(हम जंगल की वस्तियों में जाया करते थे।)
भूत वैकल्पिक 1 - कुणी गावकऱ्यांशी गप्पा मारत असे.
(कुछ (लोग) गाँववालों के साथ बातें किया करते थे।)
भूत वैकल्पिक 2- मी जाई.
(मैं जाता था।)

iii) भविष्यत् - मी ही येत जाईन तुमच्याबरोबर.
(मैं भी तुम्हारे साथ आया करूँगा।)

21. सहायक क्रियाओं के प्रयोगवाले वाक्य

मी खूप दमून जातो.	मैं बहुत थक जाता हूँ।
मी कुठे येऊन पडलो!	मैं कहाँ आ पडा!

22. संयुक्त वाक्य

i)	मी मराठी शिकलो आणि ठरवलं की महाराष्ट्र पाहायचाच.	मैं मराठी सीखा और तय किया कि महाराष्ट्र देखना ही है।
ii)	मिश्र वाक्य यांना जितकी होतील तितकी ठिकाणं दाखविणार आहे.	इन्हें जितनी जगह दिखा सकता हूँ उतनी दिखाऊँगा।

23. कर्मवाच्य प्रयोगवाले वाक्य

आपल्याकडून हा कारभार चालवला जात आहे असे प्रत्येकाला वाटेल.	हर एक को लगेगा कि सारा राजकाज उसके द्वारा चलाया जा रहा है।

24. 19 से 23 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओ का पुनरावलोकन।

पहले ही कहा जा चुका है कि हर पाठ के वार्तालाप के बाद उस वार्तालाप में आए नए शब्दों को दिया गया है। ऐसे बहुत से शब्द हैं जो मराठी भाषा में संस्कृत तथा अन्य भाषाओं से आए हैं। इनमें से बहुत से शब्दों का प्रयोग हिंदी में भी होता है। इस संदर्भ में उन शब्दों पर भी विशेष ध्यान दिया गया है जो रूप की दृष्टि से तो दोनों भाषाओं में समान हैं पर उनके अर्थ मराठी और हिंदी में बहुत भिन्न हैं। शब्दों के वे अर्थ पहले दिए गए हैं जो उस पाठ के संदर्भ के लिए उपयुक्त हैं। इसके पश्चात् यदि आवश्यक हुआ तो वे अर्थ भी दिए गए हैं जो सर्वाधिक प्रचलित हैं।

पाठों के अभ्यास, उन में सिखाए गए पाठ्य-बिंदुओं को ध्यान में रख कर तैयार किए गए हैं। इन अभ्यासों का उपयोग सीखे हुए बिंदुओं को दोहराने तथा परीक्षा के लिए भी किया जाएगा। नियम के अनुसार छात्र की परीक्षा उन्हीं बिंदुओं में ली जाएगी जो सिखाए जा चुके हैं। लेकिन प्रत्येक पाठ में नए वाक्य अवश्य देखने को मिल जाएँगे। सीखी हुई संरचनाओं और शब्दों की सहायता से विद्यार्थी स्वयं ऐसे वाक्य गढ़ सकता है जिनका प्रयोग सीखे गए पाठों में नहीं आया है। प्रत्येक अभ्यास में परीक्षा के लिए एक समय पर एक ही बिंदु को रखा गया है।

अभ्यास में दिए गए प्रश्न भाषा संरचना और शब्दों से संबंधित हैं। कुछ प्रमुख अभ्यास इस प्रकार हैं - शब्दों का क्रम ठीक करके वाक्य बनाना, वाक्य विस्तार करना, वाक्य रूपों में परिवर्तन करना, एक ही वाक्य को विभिन्न रूपों में कहना, वाक्यांशों को जोड़कर वाक्य बनाना, उचित शब्दों का चयन करना, वाक्य पूरे करना, कर्ता या कर्म के लिंग और वचन के अनुसार क्रिया में उचित प्रत्यय लगाना, प्रश्नों के उत्तर देना आदि। प्रत्येक पाठ में कम से कम पाँच-छह अभ्यासों का समावेश किया गया है।

वाचन अनुच्छेद का उद्देश्य छात्र के बोधन और शब्द भण्डार को विकसित करना है। इन अनुच्छेदों के विषय में दो प्रकार के प्रश्न पूछे गए हैं - वस्तुनिष्ठ एवं विस्तारनिष्ठ। इन प्रश्नों से छात्र के बोधन तथा अभिव्यक्ति दोनों की ही परीक्षा हो सकेगी।

व्याकरणिक तथा सांस्कृतिक टिप्पणियों में अवश्य व्याख्या के लिए सरल और साधारण भाषा का प्रयोग किया गया है। प्रयास यही रहा है कि क्लिष्ट तकनीकी शब्दावली का कम से कम प्रयोग किया जाए। छात्र को चाहिए कि वह व्याकरणिक संरचनाओं का अच्छी तरह अभ्यास कर उन्हें पूरी तरह हृदयंगम कर ले। इससे व्याकरण के नियमों को समझना सरल हो जाएगा।

पुस्तक का अंतिम खंड है - शब्दसूची। पाठों में प्रयुक्त शब्दों की सूची वर्णमाला के क्रम में दी गई है। ध्यान देने की बात यह है कि इसमें शब्दों के मूल रूप अर्थात् कोशीय रूप को ही स्थान दिया गया है। संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों का मूल रूप ही दिया गया है, न कि उनके रूपांतरित रूप। जैसे 'घराचं' (घर का), 'घरात' (घर में) 'घरापासून' (घर से) आदि रूप न देकर केवल 'घर' शब्द को ही सूची में दिया गया है। इसी तरह क्रियाओं के भी मूल रूपों को ही सूची में स्थान दिया गया है, काल और वृत्ति के अनुसार क्रिया के विभिन्न रूपों को नहीं। जैसे- यहाँ केवल 'करणे' (करना) रूप को ही रखा गया है। इससे बने करतो (करता हूँ, करते हैं) करतोस, करतेस (करते हो, करती हो), करता (करते हैं), करतो (कर रहा है), करते (कर रही है), करतात (कर रहे हैं, कर रहीं हैं) आदि रूपों को नहीं दिया है।

शब्दसूची में मराठी शब्दों के दाहिनी तरफ उन शब्दों के हिंदी अर्थ दिए गए हैं। दोनों के बीच में उन पाठों की क्रम संख्याएँ भी दी गई हैं, जिनमें वे शब्द प्रयुक्त हुए हैं। चूंकि प्रत्येक पाठ में दो दो शब्द सूचियाँ हैं; अतः पाठ के वार्तालाप में आए हुए शब्दों को संख्या के बाद 'क' और वाचन अनुच्छेद के शब्दों को 'ख' रूप में दिखाया गया है। उदाहरण के लिए 'आई' शब्द के सामने 1(क) लिखा हुआ है। इसका अर्थ है यह शब्द प्रथम पाठ के वार्तालाप में प्रयुक्त हुआ है। 'आजार' (बीमारी) शब्द की दाहिनी तरफ 14 (ख) दिया गया है। इसका अर्थ है यह शब्द चौदहवे पाठ के वाचन अनुच्छेद में है। इनके अलावा प्रत्येक शब्द की व्याकरणिक कोटी तथा उसका लिंग भी दिखाया गया है।

शब्दसूची के बाद मराठी गिनती 'एक' से 'सौ' तक और आगे सौ से परार्धतक संख्या में तथा शब्दों में दी गई है।

इस पुस्तक को कक्षा में पढ़ानेवाले अध्यापकों से दो तीन बातें कहना ज़रूरी है। किसी भी भाषा को पढ़ाने के लिए कोई भी एक तरीका ऐसा नहीं है जो पूरी तरह समर्थ हो या अपने आप में पूर्ण हो। विशेष रूप से द्वितीय भाषा पढाने के संदर्भ में यह बात शत प्रतिशत सत्य है। द्वितीय भाषा सीखने के लिए विद्यार्थी को कक्षा के भीतर और बाहर एक-जैसा ही प्रयास करना होगा। विद्यार्थी सीखी गई संरचनाओं और शब्दों को जितना अधिक दोहराएगा, उनका जितना अधिक प्रयोग करेगा, उतना ही उसके उच्चारण और बोधन में सुधार होगा। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे सिखाई गई संरचनाओं तथा मराठी शब्दों के अभ्यास के लिए कक्षा में उचित वातावरण तैयार करें। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा को उसके परिवेश में रखकर ही सीखना और सीखना चाहिए। इससे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया सरल भी होगी और स्वाभाविक भी।

सिखाई गई संरचनाओं और शब्दों का पर्याप्त अभ्यास करवा लेने के बाद शिक्षक को चाहिए कि वह पूरे पाठ को ऊँचे स्वर में पढ़ें। शिक्षक का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए। अभिव्यक्ति के अनुसार उसके स्वर में उचित उतार-चढ़ाव भी होना चाहिए। पाठ का पहला वाचन धीमी गति से किया जाए जिससे विद्यार्थी प्रत्येक ध्वनि, शब्द और वाक्य को स्पष्ट रूप से सुन सकें। इसके पश्चात् पाठ को भाषा की स्वाभाविक गति के अनुसार पढ़ना चाहिए। फिर अपने साथ विद्यार्थियों को भी सामूहिक रूप में पाठ को दोहराने के लिए कहना चाहिए। तत्पश्चात् बोधन संबंधी प्रश्न पूछे जाएँ। यदि विद्यार्थियों को प्रश्नों के उत्तर देने में कठिनाई हो तो शिक्षक उनकी मदद करें। इतने अभ्यास के बाद विद्यार्थी स्वतः उस पाठ का वाचन कर पाएगा और समझ सकेगा। यदि छात्र के उच्चारण में कोई त्रुटि हो तो शिक्षक उस त्रुटि को दोहराए बिना सही रूप का परिचय दें। इस अभ्यास के पश्चात् भी विद्यार्थियों के मन में यदि कोई संदेह या प्रश्न रह जाए तो शिक्षक उसका निवारण करें। हमारे विद्यार्थी वयस्क भी हो सकते हैं, अतः बार बार दोहराने में उन्हें हिचक भी हो सकती है और उनके लिए यह अभ्यास अरुचिकर भी हो सकता है। ऐसी अवस्था में शिक्षक अपनी सुविधानुसार व्यक्तिगत रूप से उनकी सहायता करें। सांस्कृतिक और व्याकरणिक टिप्पणियों को कक्षा में न पढ़वा कर, घर में पढ़ने के लिए कहें। उस के बाद विद्यार्थियों के संशयों का निवारण कक्षा में कर सकते हैं।

छात्रों से वाचन अनुच्छेदों को मौन रूप से पढ़ने के लिए भी कहें। अनुच्छेद के विषय में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वतः देने का प्रयास करें। आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक की मदद लें। शिक्षक छात्र को इतना समय अवश्य दें कि वह पूरे अनुच्छेद को मौन रूप से 2-3 बार पढ़ सकें। इसके पश्चात् यदि समय रहे तो प्रत्येक छात्र से बारी बारी से उस अनुच्छेद को ऊँचे स्तर में पढ़ने के लिए कहें। ध्यान रहे कि कक्षा समाप्त होने से पहले अंतिम वाचन शिक्षक द्वारा ही किया जाए जिससे छात्र के कानों में सही उच्चारण दर्ज होता रहे।

अनुवाद और लेखन का अभ्यास छात्र को गृहकार्य के रूप में दिया जाए। शिक्षक सावधानी पूर्वक जाँच करें और छात्र के संदेह और समस्याओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा कर उनका निदान करें।

कुछ पाठों में मराठी भाषा के प्रचलित मुहावरों व कहावतों का प्रयोग हुआ है। यदि हिंदी में भी उसी तरह के मुहावरे हों तो शिक्षक उनका सहारा लेते हुए अर्थ स्पष्ट करें। यदि हिंदी में ऐसे मुहावरे न हों तो शिक्षक विभिन्न वाक्यों में उनका प्रयोग करके उन के अर्थ स्पष्ट करें।

प्रत्येक पाठ के वार्तालाप में सभी वाक्यों का हिंदी अनुवाद दिया गया है। अनुवाद करते समय इस बाद का ध्यान रखा गया है कि हिंदी भाषा की अपनी प्रकृति बनी रहे। पर कहीं कहीं हिंदी में कुछ वाक्य बनावटी या अस्वाभाविक लग सकते हैं। मराठी भाषा की कुछ विशेष संरचनाओं के प्रयोग देने के प्रयत्न में ऐसा हो गया है। अनुवाद केवल इसलिए दिया गया है जिससे छात्र अर्थ समझ सकें। अनुवाद का प्रयोग मराठी भाषा सीखने के लिए न किया जाए। भाषा केवल संरचनाओं व शब्दों के अभ्यास द्वारा ही सीखी जा सकती है। हिंदी अनुच्छेद का मराठी भाषा में अनुवाद करते समय छात्र यही प्रयास करें कि उसका अनुवाद मराठी भाषा की संरचना में हो, हिंदी की संरचना में नहीं। वाचन अनुच्छेदों के हिंदी अनुवाद नहीं दिए गए हैं।

ऐसा इसलिए किया गया है जिससे छात्र मराठी भाषा को उसी भाषा के माध्यम से ही समझने का प्रयास करें और स्वयं उसका हिंदी में अनुवाद करने का प्रयास करें।

भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावशाली तथा रोचक बनाने के लिए मराठी भाषा के परिवेश का अनुभव तथा मराठी भाषा भाषियों से संपर्क स्थापित करना महत्त्वपूर्ण है। ऐसा प्रयास किया जाए कि छात्रों को मराठी भाषा-भाषियों के संपर्क में आने तथा संबंधित भाषा के गीत, कविताएँ, वार्तालाप, भाषण आदि सुनने का अवसर मिल सकें। साथ ही छात्रों को महाराष्ट्र के महान साहित्यकारों, नेताओं तथा अन्य विभूतियों के चित्र भी दिखाए जाएँ। यदि उपलब्ध हो सकें तो महाराष्ट्र के हस्तशिल्प के नमूनों से कक्षा को सजाया जाए। संभव हो तो कक्षा में महाराष्ट्र के प्राकृतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व के चित्र लगाए जाएँ तथा वहाँ की विभिन्न ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का ऑडियो-वीडियो माध्यम से भी परिचय कराया जाए।

वार्तालाप, वाचन अनुच्छेद तथा अनुवादों के लिए अनुच्छेदों का लेखन करते हुए भी यह प्रयास किया गया है कि इनके द्वारा महाराष्ट्र के जीवन, कला, संस्कृति तथा इतिहास का परिचय छात्रों को हो।

इस पाठ्यक्रम के पश्चात् छात्रों से जो भाषिक निपुणतओं की अपेक्षाएँ की गई हैं उनका विवरण पहले ही दिया जा चुका है। वास्तव में शिक्षार्थियोंने इस पुस्तक से कितना सीखा है वह इस पुस्तक की कसौटी भी है और मूल्यांकन भी। यह प्रयास प्रायोगिक है। इसमें शिक्षकों एवं छात्रों की व्यावहारिक समस्याओं के आधार पर सुधार की बहुत सी संभावनाएँ हैं। इस दिशा में सकारात्मक सुझावों का स्वागत है।

मेरी बात अधूरी रह जाएगी यदि मैं भारतीय भाषा संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. (डॉ.) ई. अण्णामलै तथा उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा विभाग के पूर्व भाषा-परामर्शी प्रो. (डॉ.) गाविंद शर्मा रजनीश के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट न करूँ क्योंकि भारती भाषा ज्योति श्रृंखला की पुस्तकों का संकल्पन, रूपांकन तथा संपादन करने तथा कार्यशालाओं के संचालन का चुनौती पूर्ण उत्तरदायित्व इन्हीं महानुभावों द्वारा मुझे सौंपा गया था। भारतीय भाषा ज्योति श्रृंखला की पुस्तकों का निर्माण काफ़ी पहले हो गया था; पर यह बहुमूल्य सामग्री बरसों तक प्रकाशन की प्रतीक्षा करती रही। संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. (डॉ.) ओंकार नाथ कौल तथा संस्थान के वर्तमान निदेशक प्रो.(डॉ.) उदय नारायण सिंह के प्रयासों से ही इन पुस्तकों को प्रकाश की किरण देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। इन सबके प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ। विशेष रूप से प्रो. सिंह ने हिंदी के माध्यम से तैयार की गई 'भारतीय भाषा ज्योति' की श्रृंखला की सभी पुस्तकों के प्रकाशन में बहुत दिलचस्पी ली है। इस श्रृंखला को उत्तरोत्तर आगे बढ़ाने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है।

पुस्तक निर्माण कार्यशाला में प्रो.(डॉ.)के.एस. राज्यश्री, डॉ. मधुसूदन गोखले, तथा श्रीमती. शालिनी लोनसाने का अत्यंत रचनात्मक योगदान रहा। इनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। कार्यशाला में हिंदी विशेषज्ञ के रूप में डॉ. वीरभद्र मिश्र तथा कुमारी. रेखा शर्मा की प्रतिभागिता के लिए मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

उक्त कार्यशाला के उपरांत आयोजित पुनरीक्षण-कार्यशाला में संशोधन, परिवर्धन, पुनर्लेखन आदि का कार्य तत्परता से संपन्न कर सामग्री को प्रकाशन योग्य बनाने के लिए

डॉ.एच.एल. बछोतिया, श्रीमती. अपर्णा मोहिले तथा श्री. गौतम केदार ब्रह्मे के अमूल्य योगदान के लिए उनके प्रति मैं हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। प्रथम कार्यशाला के बाद पुस्तक की पांडुलिपि पढ़ कर रचनात्मक सुझाव देने के लिए मैं डॉ.आई.एस. बोरकर का भी आभारी हूँ।

मैं श्रीमती अनिता बदरिनाथ को भी धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने अतीव ध्यान तथा लगन से इस पुस्तक के डी.टी.पी. का काम किया है। हमारे संस्थान के पुस्तकालय के अध्यक्ष डॉ.सी.आर. सुलोचना, तथा उपाध्यक्ष डॉ.बी.ए. शारदा, डॉ.आर. सुमनकुमारी और कॉटलोगर मीर निस्सार हुसैन, कंप्यूटर केंद्र के प्रो.(ड़ॉ). साम् मोहन लाल तथा उन के सहकर्मी, कलाकार श्री.ह. मनोहर, हमारे मुद्रणालय के प्रबंधक श्री.एस.बी. बिश्वास तथा उनके सहयोगी तथा प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष प्रो.(डॉ). रामसामी तथा उन के सहयोगी श्री.आर. नंदीश, इन सब का भी मैं यहाँ कृतज्ञता पूर्वक स्मरण करती हूँ। संस्थान के पाठ्य सामग्री निर्माण केंद्र के मेरे सहकर्मी श्री.एस्.एस. यदुराजन, डॉ.बी. मल्लिकार्जुन, श्रीमती. टी.वी. वाणी तथा कुमारी सुधा फाटक की सहकारिता भी अविस्मरणीय है। उसी प्रकार हमारे लेखा विभाग के मुख्य श्री.बी.जी. मंजुनाथ, और उन के सहकर्मी श्री.एन. यतिराजु तथा श्री.एस. राजु भी कार्यशालाओं के संचालन में मेरी बहुत मदद की है और मेरे धन्यवाद के पात्र हैं।

मैं अपने पति प्रो.के.वी. श्रीनिवासन के प्रति मेरी अपार कृतज्ञता यहाँ प्रकट करती हूँ जिन्होंने महीनों तक चलनेवाली मेरी कार्यशालाओं के संचालन में महत्वपूर्ण शैक्षणिक तथा सामयिक सहकारिता दी है। छुट्टि के दिनों तथा ऑफिस समय के बाहर भी घंटों तक घर की चिंता न कर के *'भारतीय भाषा ज्योति'* शृंखला की पुस्तकों के निर्माण में मग्न होना मुझे उन की ही मदद से कार्यसाध्य हुआ है।

उन सभी छात्रों एवं शिक्षकों के प्रति मैं अग्रिम रूप से अपना आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जो इस सामग्री का उपयोग करेंगे एवं इस के विषय में अपने विचार तथा प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराएँगे।

मैसूर
15/5/2005

बी. श्यामला कुमारी
प्रो. एवं उपनिदेशक
भारतीय भाषा संस्थान